संपादकीय

बाबाजी आगे जाओ

शायद ही ऐसा कोई नागरिक हो जिसने यह जुमला अपने जीवन में दर्जन भर से कम बार बोला हो। आप युवा हैं तो ''नौकरी में बरकत'' की दुआ का लालीपाप और नव विवाहित है तो ''जोड़ी बने रहे'' की टाफी से ललचाने को प्रयास किया जाता है। साथ में बच्चा है तो उसके ''जुग जुग जीने'' का आर्शीवाद रुपी लड्डू आपकी झोली में डालने को उतारु रहते हैं बाबाजी। आपकी इच्छाओं कामनाओं की परफेक्ट स्टडी करके उतरते हैं वे।

बाबाजी अगर अपाहिज हैं तो आप तुरन्त उनसे आर्शीवाद ले लेंगे। लेकिन अगर हट्टे कट्टे मुस्तंड हैं, तो आप कहना नहीं भूलेंगे ''बाबाजी आगे जाओ''। बाबाजी अब हाइ टैक हो गये हैं। स्पेशलिस्ट हो गये हैं। मधुमेह विशेषज्ञ हो गये हैं। अब आपसे पैसा माँगते नहीं है। आप को हुजूम का हिस्सा बनाकर आपका कमर्शियल उपयोग करते हैं। उलटी–पुलटी हरकतों से आपको भ्रमित करते हैं और करते हैं आपका दोहन। बाबाजी तो हो गये हैं उद्योगपति और आपको स्टेशन या मंदिर– मस्जिद में नहीं आपके टी.वी. में से आर्शीवाद देते दिखते हैं।

आपके अब पैसे नहीं, सिर्फ समय खाते हैं। और खा जाते हैं आपका बहुमूल्य स्वास्थ्य। उन्हें तो विज्ञापनदाता मालामाल किये दे रहे हैं। आप तो यह भी नहीं कह सकते कि ''बाबाजी आगे जाओ''। आप सिर्फ सतर्क रहें। अपने स्वास्थ्य को सिर्फ शिक्षित वैज्ञानिक हाथों में सुरक्षित रखें।

● संपादक